प्रतिभा

2019-20

हिन्दी साहित्य सभा

संत अलायसियस स्वशासी महाविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

नैक द्वारा ए+ श्रेणी प्राप्त

हिन्दी साहित्य सभा
2019–2020

स्थापना – सन् 1994

लक्ष्य – साहित्य के प्रति अभिरूचि निर्माण

प्रमुख प्रतियोगिताएँ

- अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
- निबंध प्रतियोगिता
- देशभक्ति गीत प्रतियोगिता
- लोक गीत प्रतियोगिता
- लघु कथा प्रतियोगिता
- काव्य पाठ प्रतियोगिता
- कहानी पाठ प्रतियोगिता
- प्रश्न मंच प्रतियोगिता

प्रभारी आचार्य

डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा
डॉ. रीना थॉमस

छात्र पदाधिकारी

रविन्द्र अहिरवार
अध्यक्ष

महेश्वरी द्विवेदी
उपाध्यक्ष

प्रशांत मिश्रा
उपाध्यक्ष

सुप्रिया रानी
सचिव

मानसी सक्सेना
सह–सचिव

समीक्षा तिवारी
कोषाध्यक्ष

संत अलॉयसियस स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
हिंदी विभाग
प्रतिभा

2019–2020

संरक्षक

डॉ. फा. वलन अरासू

प्रधान संपादक

डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा

संपादक

डॉ. रीना थॉमस

छात्र संपादक

रविन्द्र कुमार अहिरवार

(बी.ए. तृतीय वर्ष)

महेश्वरी द्विवेदी

(बी.कॉम.आनर्स द्वितीय वर्ष)

अनुक्रमनिका

क. रचना रचनाकार

1 संपादकीय– रविन्द्र कुमार अहिरवार

2 हिन्दी भाषा एवं आधुनिक ज्ञान– विज्ञान नेहा मिश्रा

3 बेज़ान–टुकड़ा – तुहिन पटेल

4 ग़ज़ल – रहील गुल

5 महिला सशक्तिकरण का विकास – नित्या पाठक

6 वो औरत –जानवी पंजवानी

7 चलो साथ–साथ – राकेश अहिरवार

8 शिक्षा अच्छी है या बुरी – पवन पांडे

9 विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी का महत्व– कमलकांत सोनवानी

10 महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम– सनोवर नाज़

11 हिन्दी भाषा का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग– नितिन टोप्पो

12 हमारी प्रकृति– रविन्द्र कुमार अहिरवार

13 शिक्षा की प्राप्ति– प्रद्युम्न पाठक

14. एकमात्र मेरी हार हो तुम–नितिन पांडे

15. मेरा राह गीत– सक्षम जैन

16.एहसास– अजय जायसवाल

17. बलात्कार– शिवम जायसवाल

18. कितनी खुश है वह– महेश्वरी द्विवेदी

संपादकीय

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं,

मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं।

उपर्युक्त पंक्तियाँ साहित्य के महत्व और उपादेयता का इंगित करती है। साहित्य के संदर्भ में यह उचित ही कहा गया है कि यदि राष्ट्र की संस्कृति, परम्परा और वास्तविक स्थिति को भली–भांति जानना, समझना हो तो वहाँ के साहित्य का अध्ययन कर लिया जाये।

विद्यार्थियों में साहित्य की इस अखंड ज्योति के उदीप्त करने एवं उनकी मौलिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य हिन्दी साहित्य सभा द्वारा निरन्तर महाविद्यालय में किया जा रहा है। साहित्य मूलतः भावनाओं और कल्पनाओं का क्षेत्र है। इन भावनाओं की अभिव्यक्ति अलग – अलग विधाओं के द्वारा संभव है। विद्यार्थियों को अपनी कला एवं प्रतिभा के प्रदर्शन हेतु एक मंच की आवश्यकता होती है।

इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी साहित्य सभा का शुभारंभ किया गया। इस सभा का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियों में साहित्यिक गतिविधियों का विकास करना और विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान करना है। इसी कम में प्रतिभा पत्रिका भी एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो विद्यार्थियों को लेखन हेतु प्रोत्साहित करती है, जिसमें विद्यार्थी अपने मनोभावों तथा अपने सपनों को नये–नये रंगों में व्यक्त करते हैं। आशा है कि भविष्य में इस पत्रिका प्रतिभा से विभिन्न प्रतिभाएँ लाभान्वित होकर लेखन के क्षेत्र में यश प्राप्त करेंगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ.....

रविन्द्र कुमार अहिरवार

बी.ए.तृतीय वर्ष

छात्र संपादक

हिन्दी भाषा एवं आधुनिक ज्ञान–विज्ञान

नेहा मिश्रा

बी. कॉम प्रथम वर्ष

भाषा क्या है? भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी बातों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। हम अपनी बातें दूसरों तक पहुँचाते हं और दूसरों की बातों को हम खुद समझ पाते हैं। भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है। यह केवल एक व्यक्ति से नहीं अपित सम्पूर्ण राज्य में रहने वाले लोगों से जुड़ाव रखता है। आज हम ऐसे समाज में जीवनयापन कर रहे है जहाँ हर क्षेत्र आधुनिकता से परिपूर्ण है। यहाँ शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य तक तकनीक ने अपने पाँव फला रखे हैं। इसलिए तो आज के युग को तकनीकी या आधुनिक युग भी कहा जाता है। आधुनिकता का हमारे जीवन में सकारात्मक प्रभाव भी है और नकारात्मक प्रभाव भी है, ठीक वैसे ही जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। अच्छे प्रभावों में हम देख सकते हैं शिक्षा को बढ़ा हुआ स्तर अच्छी और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ, जनसंचार माध्यमों में तेज़ी आना, इत्यादि। वहीं बुरे प्रभावों में हम देखें तो पाएँगे कि मानसिक रोगों में तेजी आना, परिवारों का टूटना और जो हमारी चर्चा का विषय है– वह नकारात्मक प्रभाव यह है कि बढ़ती आधुनिकता ने हमें हमारी जड़ों से अलग कर दिया है।

आज लोग हिंद देश के निवासी होते हुए भी हिन्दी बोलने और सुनने में शर्मिंदगी हम इसलिए नहीं महसूस करते क्योंकि हिन्दी भाषा में कमी है, बल्कि इसलिए महसूस करते हैं क्योंकि हमारी मानसिकता में कमी है। हमारा ऐसा मानना है कि हमें समाज में आधुनिक व्यक्ति होने का दर्जा तभी मिलेगा जब हमें विदेशी भाषाओं का ज्ञान होगा हमारी वेश–भूषा विदेशियों जैसी होगी और–तो–और हमारे बात–व्यवहार भी विदेशियों जैसे ही होंगे। बढ़ती आधुनिकता ने न सिर्फ हमारी बुनियाद को हिला दिया है, बल्कि हमारे संस्कारों को भी आघात पहुँचाया है। आज जो बात हमें अत्यंत प्रभावित करती है, वह यह है कि आज विदेशी हमारी संस्कृतियों को ग्रहण कर रहे हैं और हमारे अपने देशवासी इस संस्कृति से अलग होते जा रहे हैं। हम यह भूल गए हैं कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है अर्थात् वह भाषा है जो हमें हमारी जननी से प्राप्त हुई है।

हमें यह जानकर आश्चर्य होता है कि विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली प्रसिद्ध भाषाओं में हिन्दी को चौथा स्थान प्राप्त है। यह काल्पनिक नहीं है बल्कि एक बहुचर्चित शोध बताता है। इससे हम यह कह सकते हैं कि अब जो समूचे विश्व में हिन्दी सीखने की होड़ लगी है, तो हम सबको इस भाषा को अपनाने में तकलीफ कैसी?

अंत में इन पंक्तियों से अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगी–

"भारत का अभिमान है हिन्दी,

भारत की शान है हिन्दी,

जन–जन की पहचान है हिन्दी,

इसकी आन न मिटने देंगें,

इसको सदा महकने देंगें।"

बेज़ान–टुकड़ा

तुहिन पटेल
बी. ए. द्वितीय वर्ष

ऊँचाइयों से टूट कर,
गिर कर, बिखरे कर,
मैं भग्न होता गया,
मै सिमटता गया
कभी कुचला गया,
मैं दर–दर भटकता रहा।

कभी कूचें–कुचारों में,
कभी कोने–किनारों में,
मैं ठोकरें खाता गया।।
मैं पड़ा रहा जमीं पर,
धूल मिट्टी में सना हुआ।

कभी फेंका गया,
कभी जमाया गया,
तो कभी उछाला गया
मैं नज़र–अंदाज़ होता रहा।।

कभी सिगड़ी में जला,
कभी पड़ा रहा खेत–खलियानों में,
तो कभी बंजर मैदानों में!
इस गर्म चमकती धूप में,
मैं तपता गया।।

कभी फेंक कर मारा गया,
उन वीर जवानों पर,
कभी किसी काफिले की भीड़ पर,
तो कभी किसी जानवर मासूम पर।।

लथ–पथ मिट्टी–ओ–खूँ से,
मैला हुआ कभी कीचड़–धूल से।
इन बारिश–ओ–तूफान में,
मैं भीगता गया, धुलता गया।

कभी शीत ठंडी लहर में,
अकेला बदर जमता–ठिठुरता रहा।।
कभी डुबकी लगाता,
इन नदियों में, मैं।
तो कभी लहरों के भीतर,
मैं डूबता रहा गहरे साहिल–समुन्दर में।।

जहाँ मैं गया बदलता गया।
हर ठोकर तराशता गया,
मैं संवरता गया, मैं चमकता गया।।

हर घर – ओ मंदिरों में,
मैं सजता–स्थापित होता गया।
मैं बेजान पत्थर हूँ,
मैं पुजता गया, मैं पुजता गया।।

ग़ज़ल

रहील गुल
बी.बी.ए. द्वितीय वर्ष

मैं भी हूँ जो तेरे एक इशारे
पर आ जाता था
मुझे गाना तो नहीं आता था
पर तेरी खुशी के लिए गाता था।
आज वो रूठा किसी से
तो उसे याद आया है।
वो एक शख्श था,
जो मुझे हरबार मनाता था।
अब उसका दिल भी उससे बातें
छुपाने लगा है एक मैं था।
जो उसे अपनी हर बात बताता था
कभी आँचल, तो कभी बालों को
हवा से उड़ते देखना मेरा।
मैं कब तेरे चेहरे की ओर
अपनी नज़र उठाता था।
तुझपे यकीन इस कदर था कि बस मैं
अपने दोस्तों की हर बात झुठलाता
था।
उसकी तो हर अदा से मोहब्बत थी
पर उसकी एक अदा की वो।
मुझसे बात करते–करते सो जाता था।
उसकी महफिल में मेरा तो
बस एक ही काम था।
वह बातों से मोती बिखेरता था,
और मैं उठाता था।
उसे अपनी गज़लें सुनाकर सुलाता
था।
मुझे सच में नहीं मालूम कि
उसका नाम क्या है।
मैं जो बस प्यार से उसे
सारवी बुलाता था।
तुझे याद है रहील बी तेरे कुफर के
दिन
तू किस तरह हर इबादत में
उसे शरीक ठहराता था।

तेरे खातिर दुआएं करना
तो मेरी आदत है
तेरे चेहरे को देखते
रहना, मेरी इबादत है।
तनहाइयों से मजबूर
होकर, तुमने हमसे दो
बातें क्या की
मैं दीवाना ये समझ
बैठा, तुम्हें हमसे
मोहब्बत है।

मेरा दिल तोड़कर
मुझसे, यूँ घबराना मत,
तुम्हें सौ बार मेरा दिल
तोड़ने की इजाज़त है।

तू अगर मुझसे
बिछड़कर, चैन से सो
पाता है,
तो यकीन कर मेरे दिल
को भी गफलत है।

न मैं तुमसे आगे सोच
पाता हूँ न तुम्हे भूलने
की मुझमें ताकत है।

मैं खुद तो गुजार लूँ
जिंदगी कुछ भी करके
तेरे बगैर।
पर इस दिल को
तुम्हारी जरूरत है।
सोचता हूँ काश जिंदगी
गुजर जाए तेरे जुल्फों
की साए में।

ये तो बस एक सपना
है, पर ये सपना कितना
खूबसूरत है।
कुछ हमें लिखने तो दे
राहिल,
फिर तू पूछेगा हर तरफ
ये किसकी शोहरत है।

महिला सशक्तिकरण का विकास

नित्या पाठक
बी.ए. द्वितीय वर्ष

महिला सशक्तिकरण पिछड़े और प्रगतिशील देशों में एक प्रमुख विषय है क्योंकि उन्हें इस बात का काफी बाद में ज्ञान हुआ बिना महिलाओं की तरक्की, सशक्तिकरण के देश की तरक्की संभव नहीं है। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण आर्थिक फैसलों, आय, संपत्ति एवं वस्तुओं से है। महिला सशक्तिकरण क्या है? महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं के सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधार लाना है। रोजगार शिक्षा आर्थिक मौके मिल सके सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सके।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता – प्राचीन काल के अपेक्षा मध्य काल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफी कमी आयी। आधुनिक युग में ग्रामीण महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा काफी पीछे है। पुरूषों की शिक्षा 81.3 प्रतिशत है।

महिला सशक्तिकरण मार्ग एवं बाधाएँ – भारतीय समाज अलग समाज है, कई तरह के रिवाज, मान्यताएँ, परंपराएँ इसमें शामिल हैं। महिला सशक्तिकरण में बाधा सिद्ध हुए सामाजिक मापदंड, कार्यक्षेत्र में शारीरिक शोषण, कन्या भ्रूणहत्या आदि।

महिला सशक्तिकरण के लिए भूमिका –

- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना – यह योजना कन्या भ्रूण हत्या और कन्या शिक्षा को ध्यान में रखकर बनायी गयी है। इसने लड़कियों को बेहतर बनाकर सोच को बदलने का कार्य किया।
- महिला हेल्पलाइन योजना योजना महिलाओं को 24 घंटे इमरजेंसी सहायता, सेवा प्रदान की जाती है, महिलाएँ अपने विरूद्ध होने वाली हिंसा, अपराध की शिकायत नंबर पर कर सकती है।
- उज्ज्वला योजना – यह योजना महिलाओं को तरूकरी योन शोषण बचाने के लिए जाती है। इसके साथ पुनर्वास और कल्याण के लिए कार्य किया जाता है।
- महिला सुरक्षा के सुझाव – हर महिला को आत्म रक्षा करने की तकनीक सिखानी होगी तथा मनोबल को भी ऊँचा करने की जरूरत है तब उन्हें किसी तरह की परेशानी महसूस नहीं होगी। महिलाएँ स्थिति की गंभीरता जल्दी भांप लेती है। जब उन्हें गड़बड़ी आंशका लगती है तब उन्हें जल्द ठोस कदम उठा लेना चाहिए।

वो औरत

जानवी पंजवानी

बी. ए. द्वितीय वर्ष

सुनी सड़क

पर बेदर्दी की चादर ओढ़

खनकते सिक्के के सहारे जी रही थी

आंखें मीचे जी रही थी

मैंने पूछा तुम्हारा कोई तो होगा

मेरी नानी की उम्र की हो तुम

ऐसे क्यों बैठी हो तुम

क्या तुम्हारा कोंई नही

ऐसे क्यो जी रही हो तुम

कोई तो होगा तुम्हारा

क्या ऐसे ही जी रही हो तुम

टे की याद में जीने दो

वो बोली एक बेटा है

पता नहीं अब कहा रहता है

मै लापता हूँ

वह यह सबको कहता है

मेरा एक बेटा है

जो अब मुझे भूल गया है

मां के अस्तित्व के बिना जीता है

मैने पूछा चलो मेरे साथ

बोली अब बन चुकी हूँ मैं जिंदा लाष

मुझे यही रहने दो बे

चलो साथ–साथ

राकेश अहिरवार
बी. ए. तृतीय वर्ष

कि बोले चंदा, कि बोले तारे

कि रात अंधेरी, क्या हम है न्यारे

ये अंधेरा है, आँखो का परदा

जरा परदा हटाके देख तू प्यारे

कि बोले चंदा कि बोले तारे

अगर रात घनेरी तो हम है प्यारे।

कहता है हमसे सुबह को सूरज और
रातो को चंदा।

अगर पाना है छुटकारा कठिनाइयों से

तो चांद सी ठंडक बनाके रख ली

अगर पाना है मंजिल को तो धूप में तू
तपले।

कि बोले चंदा, कि बोले तारे

कि रात अंधेरी, क्या हम है न्यारे।

चलना है समय के साथ

तो समय को समझ ली

कहे जबाना, कहे मंजिल

यही वक्त है, यही समय है

समलना है तो अभी तू समल ले।

कि बोले चंदा की बोले तारे।

कि रात अंधेरी, क्या हम है न्यारे।

ले के दृढ़ संकल्प, चुन के रास्ता

उसी को समझ ले उसी को पकड़ ले

ले राहगीरों साथ तू उनका हाथ
सबको

दे खुषी सबसे ले खुखी।

यही तुम्हारा धर्म है,

कि बोले चंदा, कि बोले तारे।

कि रात अंधेरी क्या हम है न्यारे।

अगर चाहते हो चमकना

तो अंधेरों से नहीं डरना होगा

जब सुबह हो तो उजाला

फिर रात में तुम्हें जलना होगा।

शिक्षा अच्छी है या बुरी

पवन पांडे

बी. ए. तृतीय वर्ष

आज हम बात करते है, कि हमें आज की दुनिया में शिक्षा की बहुत आवश्कता है। आज प्रत्येक मनुष्य अपने मस्तिष्क का विकास करना चाहता है। तथा इसमें कोई संकोच नहीं कि शिक्षा मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण न होः–

इसी कम में मुझे दो बातें याद आ रही है जो इस देश के महापुरूषों ने कही थी।

महात्मा गांधीः–

"विद्यार्थियों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिये कि वह संसार के सभी महान धर्मों का आदर कर सके।"

इस विचार को हम लोग बचपन से पुस्तक के पिछले पृष्ठ पर देखते आ रहे हैं, तो हमारे राष्ट्रपिता महात्मागाँधी जी का वाक्य है यह वाक्य संदेश देता है कि हमें प्रत्येक धर्म को समझना और उनका आदर करना तथा उनकी जो अच्छाईयां है, उनको ग्रहण करना। वही हमारे लिए जरूरी है, कि हममें बुराईयां है, उनको दूर करना, यही अच्छी शिक्षा और बुरी शिक्षा है। वही डॉ. भीमराव अम्बेडकर हमारे देश के संविधान के शिल्पकार ने कहा है किः–

"शिक्षा वह शेरनी का दूध है, जिसे पियेगा व्यक्ति तो दहाड़ेगा जरूर।"

अब हम अच्छी शिक्षा का उदाहरण स्वयं परम पूज्य डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी को देख सकते हैं। जिन्होंने शिक्षा का सदुपयोग किया और हमारे देश के नागरिकों की नस–नस से वाकिफ होकर, उनकी नस–नस में बसने वाले, विश्व के सबसे बड़े लोक तांत्रिक देश का सबसे बड़े संविधान की रचना की। अगर हम देखे तो यही हमको समझने की आवश्यकता है, कि अच्छा क्या है और उससे भी महत्वपूर्ण की बुरा क्या है। यही तो शिक्षा का महत्व है, हमें हमेशा तर्कशील तथा सैद्धांतिक बातों को ही महत्व देना चाहिए, न कि किसी ने कहा और आपने मान लिया। एक सच्चा शिक्षित व्यक्ति वही होता है, जो सही क्या है, और गलत क्या है उसकी पहचान जानता हो। और जो सही है उसका समर्थन तथा जो गलत है उसके खिलाफ आवाज उठाना यही शिक्षित व्यक्ति का कार्य होना चाहिए।

एक व्यक्ति ने कहा था कि – "ये पढ़े लोग नहीं है ये पढ़ाये गये लोग है" यानि जो व्यक्ति अपने तर्क तथा अनुभव के साथ शिक्षा प्राप्त करता है जो सही गलत में फर्क करना जानता है वो कि शिक्षित व्यक्ति है। तथा जो किसी की सुनी बातों को बिना तर्क, विचार के मान लेता है, वही अशिक्षित व्यक्ति है इसे ही हम एक प्रकार से बुरी शिक्षा कह सकते हैं। यही मैं यह कह सकता हूं कि हमें हमेशा ऊँचा लक्ष्य बनाना, नीचे लोगों को उठाने के लिए मार्ग बनाना चाहिए, न कि उन्हें दबाने के लिए। कबीर जी कहा है किः–

"दुर्बल को न सताइये जाकि मोटि हाय

बिना जीव की स्वांस से लोह भसम हो जाए।"

अतः हमें हमेशा दूसरों की मदद करना, दुर्बलों की कभी नहीं सताना चाहिए, यही अच्छी और बुरी शिक्षा में फर्क है।

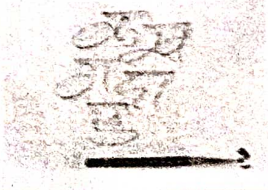

विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी का महत्व

कमलकांत सोनवानी
बी.ए.द्वितीय वर्ष

जिस देश की जनसंख्या 55 प्रतिशत से ज्यादा हिन्दी लिखना और पढ़ना जानती हो उस देश में हिन्दी का प्रचलन होना जरूरी है। विश्व में मौजूद किसी भी देश की प्रग्रति को देखा जाये जो वहीं की राष्ट्रभाषा ने उस देश की प्रग्रति को बहुत बढ़ावा दिया है। आज के समय देश की भाषा और विज्ञान का महत्व शासद ही बहस का विषय है। जहां तक भारत का सवाल है, आज हम आजादी के 68 साल बाद भी हिन्दी और विज्ञान के महत्व को न समझने के कारण भारत की प्रगति में जनमानस की भागीदारी को साथ नहीं ले। पा रहे है, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव होने के कारण आज का जनमानस जो अपनी भाषा में अच्छे तरीके से विचारों का आदान प्रदान कर सकता है। वह अंग्रेजी के कारण कहीं न कहीं बाधा और चुनौतियों में फंसा रहता है।

आज के समय हिन्दी भाषा के माध्यम से इन युवा बुद्धि और हुनर को प्रगति के राह पर लाया जा सकता है। इसमें हमें हिंदी भाषा में अनुसंधानिक लेखों का प्रकाशन को प्रोत्साहन देना चाहिए। मौलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और साथ ही साथ ही साथ में विश्व में मौजूद अलग–अलग नवीनतम् जानकारी को हिन्दी में उपलब्ध करने की आवश्यकता है। भाषा और शब्दों की जटीलता में न अटकते हुए अलग–अलग पारिभाषिक शब्दों को हिन्दी में यथाचित प्रचलित करना चाहिए।

वैज्ञानिक एवं शब्दावली आयोग, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का निर्माण एवं परिभाषा कोश का निर्माण कार्य करता है। इस कार्य को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालाय के अंतर्गत संचालित किया जाना चाहिए।

मौलिक विज्ञान लेखन को हिंदी में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विज्ञान एवं प्रौधोगिकी के नवीन एवं समसामायिक विषयों पर योजनाबद्ध तरीके से पुस्तकों को विकसित करना चाहिए।

हिन्दी में लेखन करते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के लोकप्रिय एवं प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के यथारूप देवनागिरी लिपि में मानक शब्दों के साथ दिये जाने की स्वीकार्यता मिलनी चाहिए। हिन्दी में विज्ञान लेखन के क्षेत्र में संस्थागत और व्यक्तिगत रूप से किए जाने वाले प्रयासों का संकलन किया जाना चाहिए।

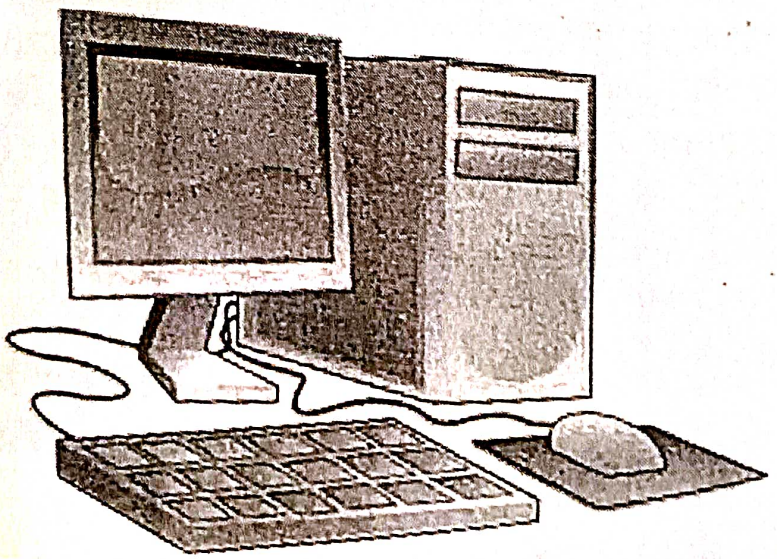

महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम

रानोवर नाज़
बी.ए.द्वितीय वर्ष

महिला सशक्तिकरण के आयाम को जानने से पहले आइये हम जाने हैं कि महिला सशक्तिकरण होता क्या है:– **महिला सशक्तिकरण का अर्थ** महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना अर्थात् उन्हें शिक्षित कर स्वतंत्र विचार करने के योग्य बना देना जिससे महिलाएं अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में समर्थ हो सके।

महिला सशक्तिकरण को बेहद ही आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती है, जिससे वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है। और परिवार व समाज में रह सकती है। अपनी निजी स्वतंत्रता व स्वयं के फैसने लेने के लिये महिलाओं को अधिकार देना ही **महिला सशक्तिकरण** है। अतः महिला सशक्तिकरण को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया गया है।

महिला सशक्तिकरण के आयाम

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओः– यह एक सामाजिक अभिया है जिसका लक्ष्य हैं कि महिला भेदभाव के उन्मूलन व युवा भारतीय लड़किया के लिये कल्याण सेवाओं पर जागरूकता बढ़ाना। 22 जनवरी 2015 को शुरू, यह महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संयुक्त उपक्रम है।

बालिकाओं के अस्तित्व, संरक्षण व शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 22 जनवरी, 2015 को पानीपत, हरियाणा में इस कार्यक्रम की शुरूआत की गई थी। बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम में लड़कियों के गिरते लिंगानुपात के मुद्दे के प्रति लोगों को जागरूक करना इसका मुख्य उद्देश्य रखा।

लड़का व लड़की में होने वाले भेदभाव को रोकने के साथ–साथ प्रत्येक बालिका की सुरक्षा, शिक्षा व समाज में स्वीकृति सुनिश्चित करना।

सबला (किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए राजीव गाँधी योजना)

केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम की शुरूआत 1 अप्रैल 2011 को की गई। महिला व बाल विकास मंत्रालय की देख–रेख में इस आयाम को चलाया जा रहा है। 'सबला' के अंतर्गत भारत के 200 जिलों में चयनित 11–18 आयु वर्ग की किशोरियों की देखभाल 'समेकित बाल विकास परियोजना' के अंतर्गत की जा रही है।

काम करने वाली महिलाओं के लिये सुरक्षित आवास आसानी से उपलब्ध कराना:–

काम करने वाली महिलाओं के लिए सुरक्षित आवास आसानी से उपलब्ध कराया गया व उनके बच्चों की देखभाल की सुविधा और जरूरत की हर चीज उपलब्ध हो। यह योजना शहरी, सेमी अरबन और ग्रामीण सभी जगह पर उपलब्ध है जहां पर महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर मौजूद है अतः महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया गया व महिलाओं को एक सुरक्षित आवास उपलब्ध कराया गया।

इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजनाः–

यह मातृत्व लाभ कार्यक्रम 28 अक्टूबर, 2010 को शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य 19 साल या उससे अधिक उम्र की गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को पहले दो बच्चों के जन्म तक वित्तीय सहायता प्रदान करना है व दो किस्तों में 6000 रूपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

महिला ई हाट– महिला ई–हाट का मुख्य फोकस घर पर रहने वाली महिलाओं पर है। उन्हें ही ध्यान में रख कर ये योजना शुरू की गई है। इसके लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने एक मंच तैयार किया है। जिसके माध्यम से महिलाएं अपने हुनर के जरिए कमाई भी कर सकती है। मंत्रालय ने अस योजना का नाम महिला 'ई–हाट' दिया है।

उज्जवला योजनाः– प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली 2 करोड़ से अधिक महिलाओं का गैस सिलेण्डर वितरित किए गए। सरकार ने प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के अंतर्गन अगले तीन सालों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली 5 करोड़ से अधिक महिलाओं को नए एलपीजी कनेक्शन उपलब्ध कराने के लिए 8000 करोड़ रूपये को मंजूरी दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 1 मई 2016 को योजना शुरू की गई।

भाग्यलक्ष्मी योजना– बेटियों के जन्म को बढ़ावा देने लिए उन्हें साक्षर और जागरूक बनाने के लिए यूपी सरकार की बेटियों को एक नया तोहफा दिया है। जिसके अंतर्गत 28 अप्रैल 2017 को गरीब परिवार में जन्म होने वाली बेटी के परिवार वालों को 50 हजार रूपए का बॉन्ड दिया जाएगा। इसी के साथ यूपी में भाग्यलक्ष्मी योजना शुरू की गई। इस योजना के तहत बेटी की योजना के तहत मां को भी 5100 रूपए दिये जाएंगे। महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत ये कदम महिलाओं को बढ़ावा देने के लिए किये गये है। महिला देश का भविष्य है। पढ़ेगी महिला तो बढ़ेगी महिला।

भाग्यश्री :– यह योजना महाराष्ट्र सरकार के द्वारा बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं के तर्ज पर काम करती है जिसका लक्ष्य था गरीबी रेखा से नीचे वाले परिवारों के जन्मी बेटी के खाते में 21,200 रूपए जमा करवाती है। बेटी के 18 वर्ष पूरे होने पर उसे 1 लाख रूपए दिये जाते है। इसका प्रारंभ 8 मार्च 2015 हुआ।

हिन्दी भाषा का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग

नितिन टोप्पो

बी ए द्वितीय वर्ष

हिन्दी भाषा की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर एक भारत में दूसरी आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यहाँ हिन्दुस्तानी भाषा की एक की मालकीकृत रूप है। जिसमें संस्कृत और तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है। और अरबी, फारसी शब्द कम है। हिन्दी संवैधानिक रूप में भारत की राजभाषा और भारत की अधिक बोली जाने वाली भाषा है और अधिक समझी जाने वाली भाषा है। क्योंकि भारत में संविधान में कोई भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया था। चीनी के बाद सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है।

हिन्दी और इसकी बोलियाँ संपूर्ण भारत के विविध राज्यों में बोली जाती है। भारत में अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते है और लिखते है। फ़िजी, मॉरीशियस, गयना, सूरीजामा, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात की जनता भी हिन्दी को न्यायालय की तीसरी भाषा मे रूप में मानता है।

हिन्दी भारत की संपर्क भाषा है। और कुछ हद तक पूरे भारत में आमतौर पर एक सरल रूप में समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी कभी–कभी नौ भारतीय राज्यों के संदर्भ में प्रयोग किए जाते है। जिसकी आधिकारिक भाषा हिन्दी भाषी बहुमत है अर्थात् बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराख़ण्ड, उत्तरप्रदेश दिल्ली के आसपास हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

लिपि :–

हिन्दी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। इसे नागरी के नाम से पुकारा जाता है। देवनागरी में 11 स्वर और 33 व्यंजन होते है और अनुस्वर और आन्सारिनक एवं विसर्ग है। बाई से दाई लिखा जाता है।

हिन्दी के विविध रूप :–

- **बोलचाल की भाषा**
- **मानक भाषा**
- **सम्पर्क भाषा**

भिन्न भाषा–भाषियों के मध्य परस्पर विनिमय का माध्यम बनाने वाली भाषा को संपर्क भाषा कहा जाताहे। अपने राष्ट्रीय स्वरूप में ही हिन्दी पूरे भारत की संपर्क भाषा बनी हुई है। अपने सीमित रूप में, प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी के व्यवहार में भिन्न भाषाभाषियों के बीच परस्पर भारतवर्ष में बोली और समझी जाने वाली राष्ट्रभाषा हिन्दी है। वह सरकार की राजभाषा भी है तथा सारे देश को सूत्र में पिरोने वाली संपर्क भाषा है। इस तरह रूप में राष्टभाषा और संपर्क भाषा है हिन्दी। हिन्दी भाषा अपना दायित्व सहजता से निभा रही है, क्योंकि बीच में उक्त संबंध है।

राष्ट्रभाषा संपूर्ण राष्ट्र में स्वीकृत भाषा है, जबकि प्रशासनिक कार्यो के व्यवहारों में प्रयुक्त होने वाली राजभाषा घोषित की जाती है तथा सम्पर्क भाषा का विकास प्राकृतिक और स्वैच्छिक आधार होताहै जो सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। संपर्क भाषा ही सर्व–स्वीकृत होकर राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में एक ही भाषा प्रयोग

लाडली लक्ष्मी योजना :– यह योजना मध्यप्रदेश में 1 जून 2015 को लागू की गई थी। 1 जनवरी 2006 के बाद जन्मी बालिकाओं को समय–समय पर ई–पेमेंट के द्वारा भुगतान किया जाता है। बशर्ते बेटी का व्याह 18 वर्ष के बाद हुआ हो।

मुख्यमंत्री, शुभलक्ष्मी:– यह राजस्थान में बेटी जन्म को प्रोत्साहित करने एवं मातृ मृत्यु को प्रोत्साहित करने एवं मातृ मृत्यु दर को कम करने के उद्देश्य से लागू की गई थी। इस योजना के अंतर्गत शासकीय चिकित्सालयों में बालिका के जन्म के 1 साल पूरे होने पर 2100 रूपए का दिया जाता है। कुल मिलाकर बेटी की मां को 7 हजार 300 रूपए की राशि प्रदान की जाती है।

महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार

कार्यक्रम (STEP) –इस योजना की शुरूआत 1986–87 में एक केन्द्रीय योजना के रूप में की गई थी। महिलाओं का कौशल विकास कराकर उनको लायक बनाना कि वे स्व–रोजगार या उद्यमी बनने का हुनर प्राप्त कर सके। इय योजना का मुख्य उद्देश्य 16 वर्ष या उससे अधिक की लड़कियों व महिलाओं का कौश्ल विकास करना है।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना–

योजना के अंतर्गत ऐसी बालिकाओं पर ध्यान देना जो विद्यालय से बाहर है तथा जिनकी उम्र 10 वर्ष से ऊपर है। यह योजना का शुभारंभ 2004 में किया गया था। केन्द्र व राज्य सरकारें क्रमशः 75: व 25: खर्च योगदान करेंगे। बालिकाओं को शिक्षित करना उन्हें आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करना। महिला बल को बढ़ावा देना।

अतः ऐसा नहीं है कि भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयास नहीं हुए है। महिलाओं को सशक्तिकरण के लिए महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम 2005, यौन उत्पीड़न 2012, अपराधिक कानून 2013 आदि का प्रावधान किया गया है।

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई आयाम कानून बनाये गए है। महिलाओं को जागरूक होना होगा उनकी शक्ति के प्रति। महिला सशक्तिकरण में महिलाओं को जागरूक किया जाना अत्यंत आवश्यक है ताकि महिला इन आयामों का लाभ उठा सके।

हमारी प्रकृति

रविन्द्र कुमार अहिरवार
बी.ए.तृतीय वर्ष

सपनों से भी सुन्दर ये प्रकृति
कराती ईश्वर का आभास हमें
जो हम चाहते है, जो हम सोचते
सब कुछ मिलता है यही।

जिस तरह माँ–पिता का प्यार
अपने बच्चों पर रहता है,
धरती माँ भी प्रकृति द्वारा
हमसे प्यार करती है।

रखती है हमको सदा
अपनी गोद में बिठाके
देती प्रकृति द्वारा प्यार हमें
वही जो देती है एक माँ सदा।

हमारी भूख, प्यास छांव और चाहत
सबका रखती स्थाल सदा,
हमको हमेशा देती रहती
खुशियाँ और नये रंग सदा।

पिता आसमान में सदा
रखता हमारे लिए रोशनी नई
देता ऊँचाईयों को पाने का संदेश
तभी तो रहता वो दूर सदा।

हमें चाहिए नई उड़ान
उस आसमान को छूने की
करके प्रकृति से प्यार
वजह बना लो जीने की।

प्रकृति से हम प्यार करे
प्यार हमको देगी वो
जितना हम न सोच सकेंगें
उससे ज्यादा देगी वो।

प्रकृति है हमारी जीवनदायिनी
इसको हमें बचाना है
अगर बचाना है धरती माँ को
तो प्रकृति को हमें बचाना है।

हम सब मिलकर लें प्रण
हम सबको प्रत्येक वर्ष
एक पेड़ नया लगाना है,
करके रक्षा प्रकृति की
उसके प्रति कर्त्तव्य अपना
निभाना है।

किया जाता है। जैसे जापान, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि देश। इस दृष्टि देश है जहाँ हिन्दी ही अपने तीन रूप में प्रयुक्त होती है।

हिन्दी और कम्प्यूटर :–

हिन्दी कम्प्यूटरी हिन्दी टाइपिंग/कम्प्यूटर और हिन्दी, हिन्दी कम्प्यूटरिंग का इतिहास, मोबाइल, कीज, में हिन्दी समर्थन और अंतरजातकार हिन्दी के उपकरण।

कम्प्यूटर और इंटरनेट ने पिछले वर्षो में विश्व में सूचना क्रांति ली दी है। आज कोई भाषा कम्प्यूटर (तथा कम्प्यूटर सदृश अन्य उपकरण) से दूर रहकर जुड़ी नहीं रह सकती। कम्प्यूटर के विकास के आरंभिक काल में अंग्रेजी को छोड़कर विश्व की अन्य भाषाओं में कम्प्यूटर पर प्रयोग की दिशा में बहुत कम ध्यान दिया गया, जिसके कारण सामान्य लोग यह धारणा फैल गयी कि कम्प्यूटर अंग्रेजी दूसरी भाषा, लिपि में काम ही किया नही जा सकता। हिन्दी की इंटनरेट में अच्छी उपस्थिति है।

गूगल जैसे सर्च इंजन हिन्दी में प्राथमिक भारतीय भाषा के रूप में पंहचानते है। इसके साथ ही अब अन्य भाषाओं के चित्र लिखे शब्दों में अनुवाद किया जा सकता है। फरवरी 2016 में एक सर्वेक्षण के हवाले से खबरे आयी कि इंटनरेट की दुनिया में हिन्दी भारतीय उपभोक्ताओं के बीच अंग्रेजी को पछाड़ दिया है। यूथ युवर्क की सर्वेक्षण रिपोर्ट ने इस आशा को सही साबित किया है।

हिन्दी और जनसंचार :–

हिन्दी सिनेमा का उल्लेख कियेग बिना हिन्दी का कोई भी लेख अधूरा होगा। मुम्बई में स्थित बॉलीवुड हिन्दी फिल्म उद्योग पर भारत में करोड़ों लोगों में धड़कने टिकी रहती है। हर चलचित्रों में कई गाने गाते है। हिन्दी और उर्दू (खड़ीबोली) के साथ अवधी, बम्बर या हिन्दी भोज या राजस्थान जैसी बोलियां भी संवाद और गाने उपयुक्त होती है। प्यार, देशभक्ति, परिवार अपर भय इत्यादि मुख्य विषय होते है।

हिन्दी का वैश्विक प्रसार :–

सन् 1998 के पूर्व मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आंकड़े मिलते थे (उनमें हिन्दी को तीसरा स्थान दिया दिया जाता था सन् 1997 में ऑफ इंडिया का भारतीय भाषाओं का विश्लेषण किया गया।

शिक्षा की प्राप्ति

प्रद्युम्न पाठक
बी.ए.तृतीय वर्ष

आज हम अगर शिक्षा की बात करें जो प्रत्येक मनुष्य शिक्षा पाने में लगा है। और शिक्षा प्राप्त करके वह अच्छा जीवन बिताना चाहता है तथा वह उन्नति करके सबसे बड़ा वनने की भी सोचते है। यह कहने में कोई संकोच नहीं की आज के युग में शिक्षा की कितनी आवश्यकता है। अगर हम देखें तो पायेंगे कि आज अगर व्यक्ति अधिक–अधिक शिक्षा अर्जित कर लेता है, तो वह समाज में तथा देश में आदर के साथ जी सकता है। मगर एक सवाल हमारे जहन में आना चाहिए कि शिक्षा पा के स्वयं की उन्नति तो करनी है मगर किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके क्या हम रट्टा मारके पास होना, क्या घर पर बैठकर पास होना, क्या अपनी शिक्षा प्राप्ति के लिए दूसरे को इससे वंचित रखना, क्या स्वयं के विकास के लिए दूसरी व्यक्ति को गड्डे में डकेलना। से सारी बातें हमारे जहन में आनी चाहिए, कि क्या हम ये सब करके शिक्षा की प्राप्ति अच्छे से कर रहे है। इससे तो अच्छा बिना शिक्षा के होना अधिक से अधिक सामाजिक तथा सार्वजनिक सुधार में महत्व देना चाहिए, शिक्षा की प्राप्ति स्वयं के लाभ के साथ–साथ समाज का गरीब का समुदाय का राष्ट्र का तथा विश्व का लाभ होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा आदमी को समानता, स्वतंत्रता, अहिंसा तथा भाईचारें की बात बताते है और यह हम आवश्यक है कि हम किस प्रकार शिक्षा प्राप्त करना चाहते है, क्योंकि शिक्षा अच्छी भी होती है, बुरी भी इसके लिए हमें हमारे महापुरूषों तथा सफल व्यक्तियों के बारे में जानने की पढ़ने की आवश्यकता है, जिससे हमें पता चल सके कि उन्होंने किस प्रकार शिक्षा प्राप्त करके समाज कल्याण के कल्याण के कार्य किये है। और उनके आदर्श तथा मार्ग को समझे। अगर हम गौतम बुद्ध की बात करें तो उन्होंने हमेशा समानता, अहिंसा, भाईचारे की बात की है। उन्होंने मनुष्य को मध्यम मार्ग बताया है, जिससे व्यक्ति अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके। वह हमेशा वैज्ञानिक बातों का तर्क देते है, वह आडंबर भरी बातों का तर्क देते है, अगर हम इनके चरित्र को पढ़े तो अलग ही शिक्षा की बात हो जाती है। स्वामी विवेकानंद ने भी शिक्षा में तथ्य को बताया है, उन्होंने कहा कि मुनष्य को हमेशा अनुभव को साथ शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने हमेशा आत्म–शक्ति पर बल दिया है। उन्होंने हमेशा कहा कि 'खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है। वह कहते ही कि जो तुम सोचते हो वो जाओगो। यदि तुम खुद को कमजोर सोचते हो

तुम कमजोर हो जाओगे, अगर खुद को ताकतवर सोचते हो, तुम ताकतवर हो जाओगे। तुम अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करो। शारीरिक शिक्षा, बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से जो कुछ भी कमजोर बनता है, उसे जहर की तरह त्याग दो। हमेशा तुम सीखते रहो। स्वामी जी कहते है कि "हम वो हैं जो हमं हमारी सोच ने बनाया है, इसलिये इस बात का ध्यान रखिये कि आप क्या सोचते है, शब्द गौण है विचार रहते है, वो दूर तक यात्रा करते है। इसलिए शिक्षा प्राप्ति करते समय हम युवाओं को स्वामी जी के वचन, उठो जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये। को समझ कर

हमको हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए। क्योंकि शिक्षा में कोई भी चीज बाधक नहीं बन सकती। हम भारत के संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर को ही देख सकते है। उनके समय में पढ़ने का अधिकार तक नहीं था। उन्हें आज उन्होंने कठिन परिस्थितियों में अध्ययन कर देश का कानून ही बना डाला। कहने का मतलब यह है कि शिक्षा ऐसी प्राप्त करों जिससे, समाज का विकास हो सके। और हमको शिक्षा अनुभव के साथ तथ इस तरह प्राप्त करनी है कि हम अशिक्षित व्यक्तियों को शिक्षित कर सके। उन्हें आगे उठा सके न कि उन्हें नीचा दिखाना आज के वर्तमान समय में भी शिक्षा का महत्व हमको समझना होगा और एक आदर्श भाव के साथ हमेशा शिक्षा प्राप्त करनी होगी। हमें समाज में डॉ. ए.पी.जी. अब्दुल कलाम, महात्मा गाँधी, विवेकानंद जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, न कि हिंसात्मक लोगों की न कि अशिक्षित लोगों की।

आज हम युवाओं को मन लगार तथा मेहनत के साथ अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता है। हमें धार्मिक तथा राजनेताओं की बातों में न फंसकर सही और गलत को समझने की आवश्यकता है, जिससे हम देश को एक साथ मिलकर उन्नत एवं समृद्ध बना सके, क्योंकि हमारी एकता देश की एकता पर बल देती है।

एक मात्र मेरी हार हो तुम

नितिन पाण्डेय
एम.एस.सी.
प्रथम सेमेस्टर

जीवन जरूरतों की मीना बजार हो तुम
जीवन जिजीविषा की अवतार हो तुम।
एक मात्र मेरी हार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
प्रतिकूल मेरी जुगुप्साओं की कतार हो तुम
मेरी उर चित्त की चित्रहार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
जिन्दगी परिचय की गुलजार हो तुम
पागल दीवाना, धरती बेचैनी की कुमार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
जो कभी युद्ध में ना लड़ा वो हथियार हो तुम
जो सह ना सका मैं वो वार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
अंडरवाटर सोनार हो तुम
एंटी मिसाइल रडार हो तुम।
एक मात्र मेरी हार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
नोटबंदी की पॉच सौ और नोट हजार हो तुम
कहने का मतलब बिल्कुल बेकार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम
एक मात्र मेरी हार हो तुम

मेरा राह गीत

सक्षम जैन
बी.काम. द्वितीय वर्ष

मैंने किये प्रयास, पर असफल आज, होकर निराश में लौटा।
मैं था कबीर, पथ था गंभीर, होकर अधीर मैं लौटा।
था मुझे ज्ञान, लक्ष्य था महान, पर खोकर ये मान मैं लौटा।
लहरों पर सवार, सहकर प्रहार, पर मान हार मैं लौटा।
सुना था विहग, विचरते हैं नभ, करते तलाश आशियाना।
पर थकते नहीं, उड़ते यूँही जब तक मिलता नहीं ठिकाना।
मैं भी था बढ़ा, पथ पर चला, बस था संभल कर जाना।
किन्तु घबरा गया, पग डगमगा गया, फिर बना दिया बहाना।
गुजरा समय चक्र, हुई दिशाएँ स्पष्ट, स्थिति देख स्वयं पछताया।
लगा मुझको भय, थी बाधा अजेय, आगे बढ़ने से फिर कतराया।
लोगों के सुने उपहास, किए एकांत विलाप, फिर मस्तक गर्माया।
किये चिंतन व शोक, हुआ आत्मबोध, तब ज्ञान कहीं से आया।
पढ़ी थी गाथाएं, सदा आती हैं, बाधाएं, पर राह छोड़ कौन जाता।
होकर अडिग, वो बढ़ता पथिक, ही लक्ष्य प्राप्त कर पाता।
चाहे आये काल, या बाधा विशाल, पर कोई राह रोक न पायेगा।

एहसास

अजय जायसवाल
बी.काम ऑनर्स
द्वितीय वर्ष

आज मेरी कमी खलती है।
दूसरों के पास आँचल देख.....
ना जाने क्यों अपनी आँखें जलती है।
फिर भी अब सब सही लगता है
हाँ, बस थोड़ी सी जी मचलती है।
पर क्या करूं कुछ कर नहीं सकता ना....
इसीलिए सब के साथ मेरी भी दिन ढलती है।
हाँ आज तेरी कमी खलती है।
हाँ आज तेरी कमी खलती है।
कुछ बदलाव नही है बस तेरे ना होने पर जरा सी पाँव फिसलती है।
इस मतलबी दुनिया के साथ अब मेरी भी साँसें चलती है हाँ अब तो जरूरी ही नहीं लगतामेरा यहाँ होना।
क्योंकि मैं भूल गया हूँ तो जरूरी नहीं ये एहसास कि सब के पास जो है वह मेरे लिए हो खास।
क्या याद ही नहीं है मुझे कोई भी ऐसा पल
काश तुझसे पूछ पाता कैसे बीतेगा मेरा कल
इस जहाँ में देखता हूँ, अजीब सी बातें होती है
अब बड़ा हो गया हूँ ना तो बहुत सी यादें....

बलात्कार

शिवम जायसवाल
बी.काम. आर्नस
द्वितीय वर्ष

बातें बहुत कुछ है कहने को शायद जुबान भी शरमा जाऐंगी।
रहने दो इनका केश पेपर में ही कम से कम दीमक तो खा जाएंगी।
जीसे न्यायपालिका भी ईन्साफ नहीं दिला सकी।
उसे ये मोमबत्तीयाँ क्या इन्साफ दिलाएगी।
शायद कुछ वक्त बाद ये
मोमबत्तियाँ ही इन्साफ को जलाने के काम आएँगी।
व्यथा तो उस पीड़िता की बीगड़ती है
मगर सोच हर किसी की बिगड़ी है
गलती भले ही किसी हैबान की होती है
फिर ये बदनामी उस लाचार की क्यों होती है।
कहना बहुत ही आसान होता है
लड़का लड़की में कोई फर्क नहीं होता है
मगर जब लड़की को इन्साफ दिलाने की बारी आती है
तब समाज की यही बात उल्टी नजर आती है।
अब वक्त नहीं है मोमबत्तियां जलाने का
अब वक्त नहीं है छुपकर रहने का
क्योंकि बहती बयार ने वो मंजर ला दिया है
जब वक्त नही है हैबोनो को जीने का....
जिस देश में अपराधी खुलेआम घूमता है
वहाँ तुम क्या और कौन सा कानून लाओगें
अरे एक पीड़िता का दर्द तुम तब समझ पाओगे
जब खुद की तुलसी को तुम मुरझाया पाओगे।
अब वक्त को भी गुजरे जमाना हो गया है....

अब वक्त को भी गुजरे जमाना हो गया है
अब तो निर्भया का केस भी पुराना हो गया है
अरे अब तो चढ़ा दो उनको फांसी के फंदे पर
अब तो हजारों निरभयों का केस पड़े हुए खजाना हो गया है।

कहते है प्रदर्शन मत करो, चीजों को मत जलाओ...
सरकार बड़ है तुम्हारी, बात मान लिया
मगर बिना दंगे के अकल ठिकाने भी तो नहीं आया....
आखिर आज तक बिना प्रदर्शन के तुमने किसको इंसाफ दिलाया।

कोई ऐसा कानून या कोई ऐसा सजा नही है....
जो उनके अंदर के हैवान को खत्म कर पाएगा...
अगर कुछ करना है तो उनके भी अंग अंग को काट डालो...
तब ऐसा हर हैवान दर्द और डर दोनों ही महसूस कर पाएगा।

कितनी खुश है वह (एक लघु कथा)

महेश्वरी द्विवेदी
बी.काम ऑनर्स
द्वितीय वर्ष

आज सीमा ऑफिस से घर आकर अपने 2 साल के बेटे को प्यार से कुछ देर तक निहारती रही। सुबह बेटे को स्कूल भेजकर ऑफिस जाने के बाद अब आठ–दस घंटों वाद बच्चे की लाड़–दुलार करके उसने अपने लिए एक कप गर्मागर्म चाय बनाई। वह चाय खत्म करने की जल्दी में थी क्योंकि पति के घर आने का भी समय हो रहा था। इसलिए आधा कप पीकर जल्दी–जल्दी घर के काम काज निपटाने लगी। तभी किचिन की खिड़की से उसकी नजर पड़ोसन रिया पर पड़ी, जो बेहद सुकून से अपने बच्चे के साथ खेल रही थी।

सीमा अपनी किस्मत पर अफसोस करने लगी। काश मैं भी रिया की तरह अपने बच्चे के साथ भरपूर समय बिता पाती। काश मेरे पति भी रिया के पति की तरह मैनेजर होते अच्छा पैसा कमा रहे होते, तो मुझे पैसों के लिए नौकरी नहीं करनी पड़ती। उधर रिया की नजर भी अचानक सीमा पर पड़ी। वह सीमा को रोज आफिस जो देख सोचती काश मेरे पति भी सीमा की पति की तरह खुले विचारों वाले होते।

एक ही समय में दोनों के दिमाग में अलग–अलग विचार उमड़ रहे थे अपन–'अपनी स्थिति से दोनों से कहीं न कहीं संतुष्ट नजर नहीं आ रही थी। दोनों अपनी जिदंगी में खुशी को नजरअंदाज करके बस एक दूसरें के बारे में यह सोच रही थी कि **'कितनी खुश है वह'**

झलकियाँ

प्रेमचंद जयंती

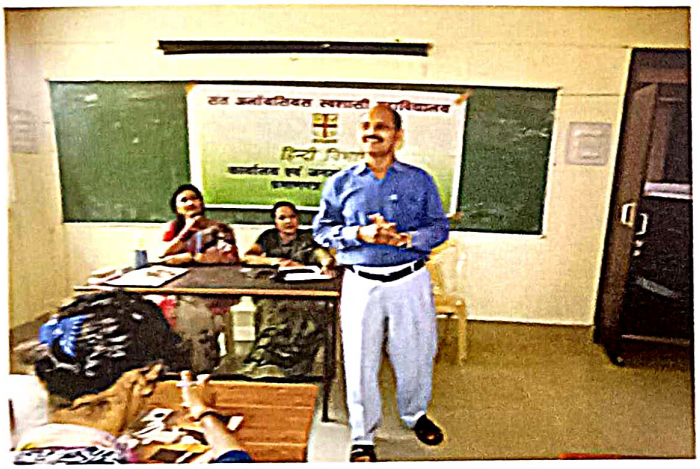

प्रमाण–पत्र पाठ्यकम

कला उत्सव

अहिंदीभाषी विद्यार्थियों हेतु कक्षाएँ

अभिव्यक्ति कला